ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

उत्तर प्रदेश में पुरातात्विक महत्व के स्थानों में एक नया नाम इटावा

ई0 **मृगेन्द्र कुमार अनिल**
अधिशाषी अभियन्ता
पी0डब्लू0डी0, उ0प्र0 एवं
उपाध्यक्ष
ब्रह्मावर्त रिसर्च इंस्टीट्यूट, कानपुर

इटावा शहर अपने नाम एवं बीहड़ों की संस्कृति के कारण हमेशा ही रोचकता से भरपूर रहा है। जिले का नाम 'इटावा' होना अनेक किवदन्तियों से परिभाषित रहा है। वैदिक काल से लेकर अभी तक ऐतिहासिकता में भी इटावा का भरपूर योगदान रहा है। अंतरजीखेड़ा (एटा) सैफई (इटावा) क्षेत्र से ताम्रकालीन औजार प्राप्त हुये हैं। अतः यह भी विश्वसनीयता से कहा जा सकता है कि इटावा–एटा परिक्षेत्र ताम्र शोधनकाल के लिए उपयुक्त रहा होगा।

मूंज एवं कोरखा के टीलों का विश्लेषण करने पर इनकी प्राचीनता का अध्ययन होता है। टीलों के निकट NBP समय के खण्डित अवशेष अभी भी प्राप्त होते हैं।

आसई में महावीर स्वामी ने अपने वर्षाकाल व्यतीत किये थे। इस संदर्भ में विविध तीर्थकल्प, पुरा साक्ष्य सूचना देते हैं। आसई, ईश्वरीपुरा से प्रचुर मात्रा में जैन मूर्तियाँ आज भी प्राप्त होती हैं। महात्मा बुद्ध के भ्रमण की सीमा मथुरा तक रही। अतः इस क्षेत्र में उनका आना भी प्रमाणित है। मौर्य काल में इटावा केन्द्रीय राजनैतिक इकाई पाटिलपुत्र के अधीन रहा था। पूर्व में इटावा का सम्पूर्ण काल खण्ड काम्पिल्य फिर कन्नौज के साथ जुड़ कर रहा। मौर्यकाल के पतन पश्चात् इटावा का क्षेत्र कुषाणों के अधीन रहा। इटावा परिक्षेत्र के चकर नगर, आसई, मूंज, कोरखा एवं कुदरकोट से कनिष्ठ एवं मौर्यकालीन ईंटें प्राप्त होती रही हैं। साथ ही इस काल के अनेकों मृदभाण्ड भी प्राप्त होते हैं। गुप्तकाल में चीनी यात्री फाह्यान ने चकर नगर, एरवा कटरा, कुदर कोट को प्रमुख स्थान बताते हुए ए–लो–ई से परिभाषित किया है। हर्षवर्धन काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस क्षेत्र को कन्नौज के निकटवर्ती क्षेत्रों में सम्मिलित किया।

प्रतिहारों के शासनकाल (9वीं सदी) में सरसई नावर दोआ आदि में बनायी गयीं तमाम प्रतिमाओं के अवशेष आज भी प्राप्त होते हैं। इसी काल में महिषासुर मर्दिनी का अंकन भी प्राप्त होता है। 10वीं–11वी सदी में महमूद गजनवी के आक्रमण जिसका वर्णन फरिश्ता, अलबरुनी एवं उतवी ने विभिन्न पुस्तकों में किया है। कालान्तर में जयचन्द्र, सुमेर शाह, जय सिंह का वर्णन भी इटावा परिक्षेत्र से जुड़ा रहा है।

इटावा जनपद के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षेत्र–

1. आसई
2. चकर नगर (खेड़ा)
3. भरेह
4. पंचनदा

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

5. मूंज / कोरखा
6. कचौटा घाट / प्रतापनेर
7. सरसई नाबर
8. वाइस ख्वाजा
9. चुगल खोर की मजार
10. काली वाहन मन्दिर
11. दोबा

आसई–

इटावा मुख्यालय से लगभग 8 कि0मी0 दूर यमुना नदी के किनारे बीहड़ों में आसई ग्राम (पूर्व में आशापुरी) स्थित है। गांव में पुाने दुर्ग के अवशेष 10 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र में फैले हुए हैं। यहाँ का किला 11वीं शताब्दी में महमूद गजनवी की सेना ने नष्ट कर दिया था। इस स्थान पर ईसा पूर्व छठी शताब्दी में बौद्ध एवं जैन धर्म गुरुओं ने अपने जीवन के विभिन्न वर्षाकालों को व्यतीत किया था। जैन ग्रन्थ में विविध तीर्थकल्प में इसका वर्णन मिलता है। ध्यान और चिन्तन की परम्परा में जैन मुनियों का कहना था कि "सौ बेर काशी, एक बेर आसई"। आसई में नौंवी से बारहवीं शताब्दी की तमाम जैन मूर्तियाँ, बौद्ध मूर्तियाँ एवं शिवलिंग इस क्षेत्र में आज भी बहुतायत से पाये जाते हैं। यह स्थान निश्चित रूप से तीनों धर्मों का महत्वपूर्ण स्थान रहा होगा। वर्तमान में एक टीले के निकट तथा ईश्वरीपुरा ग्राम में सैकड़ों की संख्या में जैन मूर्तियाँ मिली हैं। इन मूर्तियों में कुछ बलुआ पत्थर, कुछ संगमरमर तथा कुछ मूर्तियाँ काले ग्रेनाइट की भी बनी हुई हैं।

चकर नगर–

इटावा मुख्यालय से लगभग 25 कि0मी0 की द्री पर यमुना नदी के किनारे बीहड़ों में चकर नगर का खेड़ा है। वर्तमान में यहाँ पर कोई आबादी नहीं है। टीले पर एक मन्दिर मौजूद है, जहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है। मन्दिर की सीढ़ियों पर कुछ ईंटें मौर्यकाल की लगी हुई हैं। साथ ही मन्दिर के पास पुराने टूटे खण्डहर में टूटी हुई कुछ ईटें दिखाई देती हैं । कुछ दूरी पर ही बलुआ पत्थर का एक स्तम्भ शीर्ष भी पड़ा हुआ है। जो कि नौंवी से ग्यारहवीं सदी का प्रतीत होता है, साथ ही यह भी दर्शाता है कि इस स्थान पर खोज करने पर और अधिक अवशेष प्राप्त हो सकते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि शतपथ ब्राह्मण में परिचक्र नगरी का उल्लेख मिलता है, वह यही स्थान है।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

खेड़े पर आसपास के स्थानों पर ईसा पूर्व तीसरी सदी से पहली सदी तक के मृदभाण्डों के अवशेष यत्र तत्र बिखरे हुए हैं।

भरेह–

इटावा से लगभग 42 कि0मी0 दूर यमुना और चम्बल नदी के संगम पर भरेह स्थित है। भरेह में पूर्व मध्यकालीन किला तथा संगम के निकट भरेश्वर मन्दिर अपने अतीत के सौन्दर्य का बखान आज भी करते हैं। ऐतिहासिक तौर पर यहाँ पर दसवीं शताब्दी में सेंगर राजाओं का आधिपत्य रहा तत्पश्चात् क्रमशः भर तथा मेवों के बीच चले युद्ध के परिणाम स्वरूप अन्ततः भर राजाओं का शासनकाल रहा जिनके नाम पर ही इस स्थान का नाम भरेह पड़ा। 1095 ई0 में कन्नौज के राजा गोविन्दचन्द्र गहड़वाल की दत्तक पुत्री और जयचन्द्र की बहन देवकली का विवाह सेंगर राजा विवेक देव के साथ हुआ। जिसमें दहेज स्वरूप 145 ग्रामों की रियासत तथा बसीद नदी का नाम बदल कर सेंगर नदी रखा गया।

पंचनन्दा –

इटावा मुख्यालय से 45 कि0मी0 दूर प्रकृति की अनुपम छटा बिखेरता टिठौली ग्राम के निकट पंचनन्दा स्थित है। एक धारणा के अनुसार पंचनन्दा में पाँच नदियों का संगम होता है। परन्तु वास्तविकता यह है कि पंचनन्दा पर चार नदियाँ क्रमशः यमुना, सिंध, क्वारी एवं पहुज का ही संगम होता है। नदी चम्बल लगभग 6 कि0मी0 पूर्व ही भरेह स्थान पर यमुना से मिल जाती है। पंचनन्दा ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक पर्यटन दृष्टि से महत्वपूर्ण है। नदी के निकट ही कालेश्वर मन्दिर का निर्माण पेशवा बालाजी राव के शासनकाल में हुआ था। कालेश्वर मन्दिर की रचना पंचायतन शैली की है परन्तु अन्य मन्दिरों का ह्रास हो चुका है जिसके अवशेष प्राप्त होते हैं। वर्तमान में मन्दिर को नया रूप दिया गया है। परन्तु पुरानी मूर्तियाँ भी दिखाई देती हैं। पौराणिक मान्यताआ के अनुसार तुलसीदास जी यहाँ नदी के मार्ग से आये थे। पंचनन्दा अतिसंवेदनशील क्षेत्र है। दस्यु आतंक का खतरा हमेशा ही बना रहता है। यहीं पर एक ओर मध्यप्रदेश का क्षेत्र, दूसरी ओर जालौन जिला तथा तीसरी ओर जिला औरय्या का क्षेत्र आता है। जिला जालौन में बना ''कर्ण का खेड़ा'' इस स्थान से स्पष्ट प्रतीत होता है।

मूंज/कोरखा –

इटावा मुख्यालय से मूंज की दूरी लगभग 22 कि0मी0 है। वर्तमान में यह टीले पर बसा एक गांव होकर रह गया है। मूंज की ऐतिहासिकता पांचाल महाजनपुर के महत्वपूर्ण स्थलों की भांति ही अति प्राचीन है। पौराणिकता के अनुसार इस स्थान पर कभी मोरध्वज का शासनकाल रहा था। टीले के पास कुछ लोगों ने खुदाई की है जिसक कारण कई ऐतिहासिक खण्डित टुकड़े बाहर दिखाई देते हैं। मृदभाण्ड एवं अन्य वस्तुओं का आंकलन करने पर इस स्थान पर प्राप्त अवशेषों को NBP काल का कहा जा सकता है। किताबुल मामिनी के अनुसार 1018 में महमूद गजनवी ने मूंज पर आक्रमण किया था। फरिश्ता के अनुसार मूज में युद्ध के दौरान 25 दिनों तक मूंज शासकों ने गजनवी की सेना को आगे नहीं बढ़ने दिया था। कुदरकोट से प्राप्त एक शिलालेख में मूंज में प्रचुर मात्रा में मन्दिरों के होने का उल्लेख मिलता है। इस स्थान से 10वीं से 12वीं सदी की खण्डित मूतियाँ भी प्राप्त होती हैं।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

कचौरा घाट/प्रतापनेर –

इटावा मुख्यालय से 15–20 कि0मी0 की दूरी पर यमुना नदी के किनारे कचौरा घाट अत्यन्त प्राकृतिक छटा बिखेरता रमणीय स्थल है। घाट पर क्रम से सैकड़ों की संख्या में छोटे बड़े मन्दिरों का निर्माण हुआ है। कुछ में तो अत्यधिक सुन्दर नक्काशी की गयी है तथा कुछ मन्दिरों में अत्यधिक सुन्दर कलाकृतियाँ बनायी गयी हैं। पास ही प्रतापनेर का किला है जो कि वक्त के थपेड़ों में आज खण्डहर में तब्दील हो गया है। प्रतापनेर की स्थापना चौहान राजाओं द्वारा की गयी थी।

सरसई नाबर –

इटावा मुख्यालय से लगभग 35 कि0मी0 दूर उसरघाट के पास सरसई नाबर स्थित है। ऐतिहासिकता के दृष्टिगत यहाँ पर एक मन्दिर का निर्माण दसवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य किया गया था, मन्दिर की रूपरेखा पंचायतन शैली की प्रतीत होती है। वर्तमान में इसका स्वरूप परिवर्तित हो गया है। मन्दिर के अवशेष प्रांगण में चारों आरे बिखरे पड़े हैं। आज भी इसे हजारी महादेव मन्दिर के नाम से जाना जाता है। कभी यहाँ पर 1000 शिवलिंग रहे होंगे। परन्तु वर्तमान में इनकी संख्या लगभग 500 के आस–पास है। कला के दृष्टिगत स्थापत्य कला की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है।